अनीता रश्मि

सी, डी ब्लॉक, सत्यभामा ग्रैंड, कुस ई, डोरंडा, राँची

हिमानी सौंदर्य और रोहतांग

हिमानी सौंदर्य और रोहतांग

कई स्थानों पर घूमते हुए एक बात बारंबार मन-दिमाग की जमीन पर लहलहाती है कि हमारा देश अप्रतिम खूबसूरती से भरा है। अधिकांश इलाके के प्राकृतिक सौंदर्य वर्णनातीत हैं। हिमाच्छन्न, भारत के मुकुट, पर्वतराज हिमालय की तो बात ही निराली।

कुछ वर्षों पूर्व देवभूमि हिमाचल प्रदेश के शिमला, मणिकर्ण, मनाली, रोहतांग दर्रा जाने का अवसर मिला था। शिमला भ्रमण की मनमोहक यादों के बीच रोहतांग दर्रे की सैर एक अजब से लोक के दर्शन की अनुभूति से लैश।

हमने दिल्ली से शिमला तक तो हवाई यात्रा की थी। लेकिन शिमला से मनाली की मनोरम राह पर कार से चले। कुल्लू से भी जीप या कार से जाया जा सकता है। साथ चलती रही जीवनदायी नदी विपासा...व्यास नदी। आंकी-बांकी चलती हुई हरित तटिनी कहीं खूब नीचे घाटी में...अघाई अजगरी सी तो कहीं बगल में पुरजोर कशिश के साथ तेजी से हहराती हुई बढ़ती रही। हम शाम ढले मनाली में विपाशा नदी के तट पर स्थित स्टेट बैंक के हॉली डे होम पहुँच गए। वहीं हमने एक खूबसूरत गर्म कमरे में रात बिताई। बाहर की सर्दी का आलम न पूछिए।

रोहतांग दर्रा

यहाँ के रमणीक स्थानों में से एक बेहद खूबसूरत जगह रोहतांग दर्रा, जिसका प्राचीन नाम ' भृगु-तुंग ' है, को देखने की इच्छा संजोए हम एकदम भोर में निकल पड़े। साथ में व्यास सरिता चल रही थी। हमारी मंजिल इसी व्यास का उद्गम स्थल था, जो रोहतांग दर्रे में स्थित था।

सुबह-सुबह निकल पड़ने की हिदायत पहले ही गाँठ बाँध ली थी क्योंकि लाहौल स्पीति जानेवाला यह मार्ग दुपहरिया में जाम हो जाता है। दोपहर तक लौटना होता है। यह रास्ता प्रत्येक वर्ष मई के प्रथम सप्ताह में खुलता है। अतः मई-जून से अक्टूबर तक ही देवभूमि की सैर श्रेयस्कर! अन्यथा रोहतांग देखना असंभव।

आगे बढ़े तो देखा, खूबसूरत रास्ते पर कई पंक्तिबद्ध गाड़ियाँ हमारे साथ संगिनी की तरह चल रही थीं। चारों ओर हरे-भरे, श्वेत,भरे-पूरे नग। सूर्य की स्वर्णिम किरणों से नहाए ऊँचे-ऊँचे पहाड़...स्वर्णाभ!...अद्भुत! नयनाभिराम! उनके आगोश में बनी राह पर एक तरफ दूर से खिलखिलाती व्यास तटिनी नीचे और नीचे छूटती हुई घाटियों में नजर आ रही थी। सुनहरी धूप शिखरों पर सुस्ताती हुई, फिर हौले से आगे बढ़ जाती हुई बेहद भली लग रही थी।

थोड़ी ऊँचाई पर जाते ही गाड़ी एक छोटी सी दुकान के पार्श्व में रुकी। स्थानीय पोशाक पट्टू, गले में मोटे सिक्कड़ और स्थानीय गहने धारण की हुई दो महिलाएँ उस दुकान में अपनी सेवा दे रही थी। दोनों ने बड़ी तत्परता से हम तीन यात्रियों को कोर्ट, पैंट-जैकेट और फूलबूट पहनाकर हिम से लड़ने को पूर्णतः तैयार कर दिया। उन जैसी कई स्त्रियाँ भर दिन अपने खेतों-घरों में खटतीं हैं, धान, मटर, आलू, मक्का उपजाती हैं। सुबह-दोपहर दुकानों पर बैठ यायावरों को सर्द हवाओं, बर्फ से बचने का उपाय थमाती हैं।

मैंने कैमरा सँभाला और फटाफट दो-चार तस्वीरें कैद! कल से रास्ते भर जो स्थानीय पोशाक में सजी महिलाओं की तलाश थी, यहाँ आज पूरी हुई। फिर हम आगे बढ़ते रहे। सावधानीपूर्वक धीरे-धीरे गाड़ी चलाते स्थानीय ड्राइवर से मैं लगातार प्रश्न पूछ अपनी जिज्ञासा को शांत कर रही थी।

ओम प्रकाश जी ने चुप रहने का इशारा किया। फिर फुसफुसाहट " मत बात करो। एकाग्र होकर गाड़ी चलाने दो। गाड़ी फिसल रही है। "

काँच सा पारदर्शी तुषार...वन वे और संकरे घुमावदार रास्ते के दूसरी ओर हजारों फीट की श्मशानी गहराई! पूरा रास्ता जैसे काँच से निर्मित, काँच पर फिसलती गाड़ी। सच में, वहाँ गाड़ी चलाना पहाड़ के स्थानीय दक्ष ड्राइवरों के वश की ही बात थी। मैं चुपचाप आस-पास को आत्मसात करती हुई मगन हो गई। सँकरी सड़क के पास झरने भी दिखे...बर्फीले झरने ! कहीं दुग्ध धवल जमे हुए, कहीं आधा पिघले।

थोड़ी देर में दोनों ओर से श्वेताभ तुषार की मोटी, गठीली दीवारों के बीच से हम आगे बढ़ रहे थे...जैसे बर्फ की सुरंग लेकिन छतरहित। उसको पार करते ही बाईं ओर बर्फ का जमा समंदर!...ये मोटी परत! रोहतांग दर्रा का विशाल हिमखंड सामने! उस पर स्लेज गाड़ियाँ दौड़तीं हुईं।

सामने ही पर्वत का एक हिस्सा काट कर पार्किंग स्थल बनाया गया था। वहीं हमारी गाड़ी भी गाड़ियों की भीड़ का हिस्सा बन गई। उतरते ही हिमशीतल हवाओं के तीर बेधने लगे। गर्म पोशाकें भी उनका सामना करने में अक्षम साबित हो रही थीं। फूल बूट थोड़ी सहायता कर रहा था और पाँव की उँगलियाँ सुन्न होने से बच रहीं थीं।

इतना तुषार तो गुलमर्ग में देखा था। यहाँ कल्पना नहीं की थी। चारों ओर तुषाराच्छादित उत्तुंग शिखर! दूर से झाँकते हुए पर मन के कितने निकट! बर्फ पर चलनेवाली गाड़ियाँ यात्रियों को अपनी गोद में थामे गहरे बर्फीले गड्ढे को पारकर आगे पहुँचाकर लौट जा रही थीं। दिवाकर सिर पर और ठंडी हवा हड्डियों को दहलाती हुई। तब तक एक भी दुकान खुली नहीं थी। चाय की गर्मी की शिद्दत से चाह, जरूरत!

हम पैदल ही घूमने निकल पड़े। बर्फ पर खेलते, नाचते, स्लेज गाड़ी पर फिसलते, अश्वारोहण करते सैलानियों की अथाह लहर उस अथाह हिम के रत्नाकर पर। सामने ही हिम से बना एक बैरक सा नजर आया। बर्फीले बैरक के पास लाहौल स्पीति की ओर पैदल बढ़नेवाला चरवाहा भी अपने भेड़ों के साथ सुस्ताता हुआ बैठा था, काफी कम वस्त्रों में...उत्साह से लबरेज! हिम पर बैठा निर्द्वंद्व! घर वापसी की खुशी उसके चेहरे को उद्भासित कर रही थी। ये लाहौल स्पीति, लेह की खून जमा देनेवाली ठंड से बचने के लिए सर्दियों में नीचे के इलाकों में कहीं रह लेते हैं। फिर मौसम बदलने पर इन दिनों वापस अपने आशियाने की ओर।

सर्दियों में हिमानी, बेहद ठंडी जगहों से भागकर अन्यत्र शरण लेनेवाले सारे चरवाहे अपने रेवड़ों के संग इस समय अपने घरों की ओर लौटते हैं। थोड़ी देर में दुकान की अँगीठी जली और उसने, हमने चाय पीकर ठंड को ठेंगा दिखाने का भ्रम पाला।

 ISSN:2583-8849

व्यास सरि का उद्गम स्थल

आगे बढ़ते ही देखा, सामने बर्फीली गुफा। व्यास सरिता का उद्गम स्थल!...महाभारत ग्रंथ के रचयिता वेद व्यास मुनि की तपःस्थली! यहीं व्यास ऋषि तपस्या किया करते थे। यह जगह एक मंदिर के रूप में पूजित होती हैं। मंदिर के अंदर ही अमृत सम जल का कुंड!

महाभारत काल से पूर्व व्यास नदी 'अर्जीकी' नाम से सुविख्यात थी। कुछेक जगहों से जल धाराएँ निकलकर 10 कि. मी. दूर पलाचन गाँव में मिलकर हहराती व्यास नदी बनाती है। 460 कि. मी. लंबी सरिता आगे अरब सागर में खुद को विलीन कर देती है। उसके उद्गम स्थल को देखने की उत्सुकता चरम पर। हमने गुफा के अंदर थोड़ी देर समय बिताया।

गुफा से बाहर आते ही साहित्यकार डॉ. माधुरी नाथ दी से मुलाकात हो गई। वे सपरिवार वहाँ आई थीं। राँची की महिलाओं की प्रसिद्ध साहित्यिक संस्था 'सुरभि' की सदस्या। वे बहुत खुश हो गईं। दूसरी जगह पर परिचित के दर्शनजनित प्रसन्नता उनकी बातों से छलक रही थी। प्रसन्नता इधर भी, उधर भी...बेहद।

बर्फ के समंदर पर अनेक घोटक दौड़ रहे थे। स्लेज गाड़ियाँ भी। थोड़ी देर में घोड़ों पर सवार होकर हम तीनों चन्द्रभागा नदी की ओर बढ़े। जमी हुई चन्द्रभागा नदी के पास घोड़ेवाले ने रास पकड़ रोक लिया।

" इससे आगे नहीं जा सकते। "

" क्यों ? "

" यहाँ से दूसरा इलाका शुरु हो जाता है। उधर जाना मना है। "

यह भी बताया कि इस तरफ से भी पैदल लाहौल स्पीति जाते हैं लोग। भेड़वाला याद आ गया। इसी चन्द्रभागा से तो उन सबको जाना है अपने घर की ओर।

लोक रंग

चन्द्रभागा सरि दो नदियों के मिलन से बनी है। चन्द्रमा की पुत्री चन्द्र और सूर्य पुत्र भागा! दोनों एक-दूसरे के प्रेम में पागल! विरोध का स्वर ऊँचा हुआ तो दोनों ने भागकर ब्याह रचा लिया। दोनों के पावन मिलन से बन गई नवीन नदी...चन्द्रभागा!

सर्दियों में यह सरि तुषार धवल कठोर धरा में ढल जाती है। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि यह कल-कल, छल-छल बहती नदी होगी, अन्य ग्लेशियरों की मानिंद।

हर जगहों की लोककथाओं में खुलता है प्रकृति का अनजाना, अद्भुत किस्सा। इन किस्सों में प्रकृति का हर उपादान गुँथा रहता है, यह बात खिस्से-कहानियों के देशवाले हम झारखण्डी कैसे नहीं समझते। प्राकृतिक उपादानों से रची-बसी विपुल लोककथाएँ हमारे झारखण्ड में करवटें लेती रही हैं। सूर्य, चंद्र, पृथ्वी, नदी, सर्प, बाघ सब पर लोककथाएँ। यहाँ भी नदियों की लोककथाओं से मिलना होगा, कहाँ सोचा था।

बहुत देर तक उसे देखते रहने का आन्नद लिया। गजब! इतना सौंदर्य! हर ओर से हिम से घिरा हिमालय झाँककर अभिवादन कर रहा था और पर्यटकों को लुभा रहा था।

पर्यटकों के लिए दर्रे के एक पहाड़ीनुमा स्थल पर रस्सी के सहारे तुषार पर ऊपरी चोटी से फिसलते हुए नीचे आने की व्यवस्था। टायरों पर बैठ बर्फ की फिसलपट्टी का खूब आन्नद ले रहे थे बच्चे, किशोर।

यायावरों की हँसी-किलकारी, खिलखिलाहट जवां लेकिन बर्फ कराहने लगी थी। थोड़ी देर में ही दुग्ध धवल धरित्री लोगों के बूटों, नालभरे खुरों, स्लेज गाड़ियों, दौड़ते-भागते बच्चों एवं बड़ों के पाँवों से रौंदे जाने के कारण धूसर रंग में परिवर्तित हो गई।

यहाँ के बारे में एक और कथा प्रचलित है - " पहले कुल्लू एवं लाहौल स्पीति अलग थे। दोनों के बीच कोई संपर्क नहीं। लोगों की भक्ति और प्रार्थना से पिघलकर उनके इष्ट देव महादेव ने उन्हें जोड़ने के लिए अपने त्रिशूल से भृगु-तुंग पर्वत को काटकर यह भृगु-तुंग (रोहतांग दर्रा) मार्ग बनाया था, जहाँ से अब लेह जाना भी आसान हो गया है। "

रोहतांग दर्रे के पूर्व में स्थित भृगु झील के पास ऋषिवर भृगु योग-ध्यान में निमग्न रहते थे। इस झील को एक प्राचीन लोककथा के कारण 'पुल ऑफ गॉड्स' के रुप में भी जाना जाता है। कहते हैं, देवताओं ने इसके पवित्र जल में डुबकी लगाई थी। इसी से यह झील कभी पूरी तरह से जम नहीं पाती है।

हिमालय की श्रृखंलाओं का विहंगम दृश्य आँखों में भरकर दोपहर को सब वापस लौट रहे थे। जिन लोगों ने बर्फ पर चलनेवाली गाड़ियों से इस पार पहुँचाया था, वे ही वापसी के साथी। आस-पास के गाँवों-बस्तियों से आकर इन लोगों के साथ घोड़ेवाले, दुकानदार, बाजार सजानेवाले दोपहर तक अपनी सेवाएँ देते हैं। फिर सन्नाटा...घनघोर सन्नाटा! रात में रुकने की इजाजत नहीं। संभव भी नहीं।

अब धूप खूब खिलकर गर्मी पैदा करने लगी थी। ऊपर 13, 050 की ऊँचाई पर भी भुट्टों का संसार सजाए स्थानीय लोग बैठे थे। पूरा बाजार सज चुका था, जो थोड़ी देर बाद ही उजड़ जानेवाला था। फिर खेत-खलिहान का कार्य।

अभी हम अपनी गाड़ी पर बैठ ही रहे थे कि दो घोड़ियों की रास थामे एक खूबसूरत महिला नजर आई। जब तक कैमरा सँभालती, वह अश्वों को खींचती हुई खड़ी, तीखी, भयावह चढ़ाई से ढलान में उतरती गुम हो गई। कैमरे को फोकस करते-करते क्षण भर में गायब! हम गाड़ी से जब तक नीचेवाली सड़क तक आए, वह गधे के सिर का सींग बन चुकी थी। पहाड़ सब में हिम्मत भरने के साथ फुर्ती भी भरता है।

मार्ग में एक जगह ग्लाइडर का आन्नद लेते पर्यटक मिले। रंग-बिरंगे ग्लाइडर आकाश के सानों पर पतंग से लहरा रहे थे।

रास्ते में एक अन्य जगह हम रुके, जहाँ उफनती विपाशा तटिनी के हरे जल के पार्श्व के मैदान में दुकानों की भरी-पूरी दुनिया! वहीं हमने दोपहर का भोजन लिया और नीले-हरे जल को एक-दूसरे पर उछाल वहाँ की स्वच्छता की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सके। इस कोण से अज्ञेय जी के 'मेरे नगपति, मेरे विशाल' काफी आकर्षक नजर आते हैं।

पर इतना मुग्ध करनेवाला भारत का मुकुट, पर्वतराज यहाँ के 'मेहनतकश बादशाहों, बेगमों को' (मधु कांकरिया के शब्द, साभार) भयंकर कड़कड़ाती ठंड में कितना तंग भी करता है। मुझे लगा, हम सबको कठिन जीवन जीनेवाले इसके वाशिंदों के प्रति अधिक उदार होने की आवश्यकता है। उनके अथक-अकथ श्रम को मन से महसूस करने की जरुरत है।

तट पर बैठ एक अजब सी आसक्ति और वैराग्य की दुनिया में डूबती-उतराती रही। किसी भी पर्वतीय स्वच्छ नीलाभ हिम शीतल सरि के तट पर घंटों बिताया जा सकता है...नई ऊर्जा से लबरेज होकर। रुह तक सुकून लेकिन वाशिंदों की अथक-अकथ मेहनत दिल को छू जाती है।

शाम ढले हम मनाली के माल रोड पर थे। व्यास नदी के ऊपर बने पुल पर चढ़कर नीचे नदी की खूबसूरती को देखते हुए उसकी खोज करनेवाले व्यास मुनि के प्रति नतमस्तक भी हो जा रहे थे। आखिर हम व्यास की

तपःस्थली तथा व्यास नदी के उद्गम स्थल से लौटे थे।

बहुत दिनों तक दर्रे की याद दिल में रही। फिर कुछेक चित्र अपनी यात्रा पुस्तक 'ईश्वर की तूलिका' का कवर बन सदा के लिए सुरक्षित हो गए...यथा परतदार खेत के साथ स्वर्णाभ शिखर और पट्टू पोशाक धारण करनेवाली स्त्री के चित्र।